International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 116-118

चीन पाकिस्तान की जुगलबन्दी के बीच भारत

प्रदीप कुमार

जे.बी.टी. शिक्षक, सरकारी प्राथमिक विद्यालय, धाणी शोभा, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत।

सारांश

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राष्ट्रों की पारस्परिक अर्न्तनिर्भरता वह सच्चाई है जिससे कोई देश बच नही सकता। आज विश्व के सभी देश अपने-अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति व उनमें सम्वर्द्धन के लिए प्रयासरत है। प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए विदेश सम्बन्धों में स्वतन्त्र विदेश नीति का प्रयोग करता है। प्रायः सभी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की अधिकाधिक पूर्ति व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्थिति और भूमिका में सम्मानजनक स्थान पाने के लिए विभिन्न राष्ट्रों से अपने द्विपक्षीय सम्बन्ध प्रगाढ़ करने की चेष्टा करते हैं। किसी देश की विदेश नीति या द्विपक्षीय सम्बन्ध, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के वातावरण में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा चुनी गई स्वहितकारी रणनीतियों का समूह होती है। एक देश के पर राष्ट्र से सम्बन्ध बहुत से कारकों पर निर्भर करते हैं। भारत के पर राष्ट्रों से सम्बन्ध उन अनेक तथ्यों को समेटे हुए है, जो कभी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से उपजे थे, शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व व विश्व शान्ति का विचार हजारों वर्ष पुराने उस चिन्तन का परिणाम है, जिसे महात्मा बुद्ध व महात्मा गाँधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश नीति में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध महान राष्ट्रीय आन्दोलन की उपज है। इन्हीं आदर्शों को भारत ने पर राष्ट्र सम्बन्धों का आधार बनाया है। इन्हीं मूल्यों को केन्द्र में रखकर भारत अपने से पड़ोसियों से सदैव मधुर सम्बन्धों का इच्छुक रहा है।

मूल शब्दः पंचशील, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद ।

प्रस्तावना

भारत विश्व के विशाल देशों में एक है तथा विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। भारत के अधिकतर देशों के साथ औपचारिक राजनयिक सम्बन्ध हैं। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। 1947 में अपनी स्वतन्त्रता के बाद से, भारत ने अधिकांश देशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखा है। वैश्विक मंचो पर भारत सदा सक्रिय रहा है। 1990 के बाद उदारीकरण की नीति अपनाकर भारत ने आर्थिक तौर पर भी विश्व को प्रभावित किया है। सामरिक तौर पर भारत ने अपनी शक्ति को बनाए रखा है और विश्व शान्ति में यथासम्भव योगदान करता रहा है। विश्व की अर्थव्यवस्था में एशिया का महत्व बढ़ता जा रहा है। कहा जाता है कि 19वीं सदी यूरोप की थी और 20वीं सदी अमेरिका की तो 21वीं सदी एशिया की होगी। चीन और पाकिस्तान भारत के पड़ोसी देश हैं। भारत के साथ इनके सम्बन्ध नरम-गर्म ही रहे हैं। एक कहावत है कि आप अपने पड़ोसी को नही बदल सकते। भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात से ही दोनों देशों से अपने आदर्शों व मूल्यों पर कायम रहते हुए सम्बन्ध सुधारने का प्रयास किया है। लेकिन निष्कर्ष वही 'ढाक के तीन पात' रहे हैं। दोनों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि भारत ने सदैव 'एक हाथ से ताली बजाने' की कोशिश की है। क्योंकि दूसरा हाथ समानान्तर रुप से आगे बढ़ा नही। इसकी शुरुआत चीन के साथ 1954 में पंचशील समझौता व पाकिस्तान के साथ नेहरु-लियाकत समझौते द्वारा की गई। इस सबके बावजूद चीन-पाकिस्तान भारत के लिए ''दूर के पड़ौसी' ही बने रहे तथा सम्बन्धों में एक आदर्श स्थिति नही लाई जा सकी। 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर ''हिन्दी-चीनी भाई-भाई'' की धज्जियाँ उड़ाई तो 1965 में पाकिस्तान ने तत्कालीन परिस्थिति का लाभ उठाने के लिए भारत पर आक्रमण कर दिया। सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अनुभूतियों की दृष्टि से पाकिस्तान भारत के सबसे अधिक निकट होने के बावजूद राजनीतिक अनुकूलन एवं विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में भारत से बहुत अधिक दूर है। सजातीय, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से साम्यता होने के बावजूद परस्पर सम्बन्धों में ऐसी गर्मजोशी कभी नजर नही आई। चीन के साथ भी प्राचीन समय से ही सांस्कृतिक व ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं। किन्तु चीन, भारत की मित्रता का हृदय से कभी इच्छुक नही रहा। 1954 में दोनों देशों के बीच 8 वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत भारत ने तिब्बत में अपने ''अतिरिक्त देशीय अधिकारों'' को चीन को सौंप दिया। इसी समझौते की प्रस्तावना में ही 'पंचशील' के सिद्धान्तों की रचना की गई थी मगर 1962 में चीन भारत पर अकारण ही आक्रमण कर सम्बन्धों को कटु बना दिया। चीन और पाकिस्तान का सामरिक गठजोड़ वर्तमान में अपनी चरम सीमा पर है। भारत के सम्बन्ध में देनों देश ''दुश्मन का दुश्मन मित्र'' होता है की धारणा को अपनाए हुए हैं। दोनों का यह गठजोड़ भारत के आर्थिक, राजनीतिक सामरिक हितों के लिए हानिकारक है।

भारत-चीन सम्बन्ध एक नजर में

अतीत पर नजर डालें तो भारत-चीन सम्बन्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रुप से हजारों वर्ष पुराने हैं। चीनी यात्री समय-समय पर भारत आए तो कितने ही चीनी इतिहासकारों ने अपनी कृतियों में भारतीय इतिहास का विवरण प्रस्तुत किया है। महाभारत, मनुस्मृति, अर्थशास्त्र, जातक कथाओं व अन्य साक्ष्यों से भारत-चीन के प्राचीन सम्बन्धों का पता चलता है। प्राचीन काल से ही भारत में चीन का रेशमी कपड़ा प्रसिद्ध रहा है। भारत की धरती बुद्ध की भूमि है, तथागत का जन्म-कर्म प्रदेश है और चीनी विद्वान भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े तथ्यों की जानकारी के लिए भारत आते रहे हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात नेहरु ने चीन के साथ सम्बन्ध सुधारते हुए पंचशील के सिद्धान्तों पर समझौता किया। किन्तु 1962 में चीन ने अकारण ही भारत पर आक्रमण किया तथा एक तरफा युद्धविराम भी घोषित कर दिया। माओ के चीन का सिद्धांत था। ''इशारा दांई ओर, लेकिन मुड़ों बाई ओर''। चीन धोखे की कला के साथ-साथ शक्ति का पुजारी रहा है। माओ का कथन था कि 'शक्ति बन्दूक की नली से निकलती है।'' वह भारत की गुट निरपेक्षता की नीति का मजाक उड़ाता था उसके अनुसार 'गुटनिरपेक्षता धोखे की टही है।' एक ही झटके में माओं-झाऊ डुंग ने पंचशील की भावना का अनादर करते हुए शान्ति और सदभाव के माहौल में भारत को आर्थिक-औद्योगिक आधार विकसित करने का नेहरु का सपना चूर-चूर कर दिया। पिछले कुछ वर्षों से चीन भारत को राजनायिक और सामरिक मोर्चे पर अस्थिर और असंतुलित करने का कोई भी अवसर नही छोड़ता। चीन भारत की उभरती अर्थव्यवस्था व विकास दर से बौखलाया हुआ है तथा उसे परेशान करने का कोई मौका हाथ से नही जाने देता। चीन भारत का बड़ा व्यापारिक सांझेदार बन गया है फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर भारत के विरोध व पाकिस्तान की कुटिल चालों का समर्थन करता रहता है। एन.एस.जी. में भारत की सदस्यता में चीन लगातार रोड़े अटका रहा है। एन.एस.जी. सदस्यता हासिल होने से न्युक्लियर सम्बन्धी तकनीक हासिल करने में आसानी होगी परन्तु चीन की हठ धर्मिता से भारत इसकी सदस्यता से अब तक वंचित है। ऐसा वह पाकिस्तान के इशारे पर कर रहा है। पठानकोट हमले के बाद भारत ने जब 'जैश-ए-मोहम्मद' के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर पर प्रतिबन्ध लगाने का मुद्दा उठाया तो उस प्रस्ताव को भी चीन ने वीटो कर दिया। यह दर्शाता है कि चीन आतंकवाद जैसे मुद्दे पर भी दोहरे मापदण्ड अपनाता है तथा पाकिस्तान के हितों की रक्षा व भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर नीचा दिखाने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। चीन ने इससे पूर्व 2008 में मुम्बई हमले के बाद मसूद अजहर पर प्रतिबन्ध लगाने के भारत के प्रयासों को भी वीटों कर दिया था। चीन भारत को चारों ओर से घेरने की नीति बना रहा है। उसी का परिणाम है कि चीन ने अपनी "String of Pearl's" की नीति के अन्तर्गत (ग्वादर) पाकिस्तान, (हम्बनटोटा) श्रीलंका, (चटगाँव) बांग्लादेश, म्यान्मार, थाइलैण्ड में सामुद्रिक व सैन्य सुविधाएँ अर्जित करके अपनी सामुद्रिक सेना हेतू 'अग्रिम संक्रियात्मक आधार' स्थापित कर लिया है। ऐसा कर वह हिन्द महासागर में न केवल अपने सामुद्रिक-व्यापारिक हितों की रक्षा करेगा अपितु तटवर्ती क्षेत्रों में राजनैतिक व प्रभुत्व के रणनीतिक विस्तार की भी कोशिश करेगा। और अन्ततः यह भारत के सामरिक हितों के लिए प्रतिकूल परिस्थिति होगी। हिन्द महासागर में अपने सामरिक संजाल को विस्तृत व प्रभावी करने हेतू चीन द्वारा सन् 2011 में सेशल्स में सैन्य आधार की स्थापना से यह पुष्ट हो रहा है कि वह सामुद्रिक वर्चस्व हेतू कितना व्यग्र है। यद्यपि बहाना इस क्षेत्र में समुद्री लुटेरों के नियन्त्रित करने का बताया जा रहा है। चीन की नजर महासागारों के प्राकृतिक संसाधनों जैसे-हाइड्रोकार्बन, खनिज, पैटोलियम, प्राकृतिक गैस आदि पर भी है। इस क्षेत्र की समग्र रुप से बढ़ती उपयोगिता तथा अमेरिका व उसके सहयोगी देशों के बढ़ते प्रभाव को कम करने तथा क्षेत्र में अपना प्रभुत्व व वर्चस्व कायम करने के लिए भी चीन दक्षिण चीन सागर में आक्रामक रुख अख्तियार किए हुए है। फिलीपीन्स, वियतनाम, मलेशिया, कम्बोडिया, ब्रुनेई, जापान, दक्षिण कोरिया ने चीन के इस कदम की घोर निन्दा की है। भारत द्वारा वियतनाम में समझौते के तहत तेल व गैस अन्वेषण के कार्य की चीन द्वारा तीव्र आलोचना की गई ।

भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध

पाकिस्तान के सन्दर्भ में भारत की विदेश नीति का लक्ष्य सदैव मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास करना रहा है। भारत-पाक विभाजन के बाद से ही भारत-पाक सम्बन्धों में कोई खास सामंजस्य आज तक स्थापित नही हो सका। वस्तुतः मुस्लिम लीग की हठधर्मिता और धर्मान्धता की आधारशिला पर बने इस राष्ट्र की नींव ही घृणा, नफरत व हिंसा पर आधारित है। भारत-पाक विभाजन के वातावरण ने जिस घृणास्पद अविश्वास की भावना को जन्म दिया, वही आगे चलकर दोनों देशों के बीच संघर्षपूर्ण सम्बन्धों का आधार बनी। यही कारण है अब तक भारत पाकिस्तान के बीच 1965, 1971, 1999 में तीन युद्ध हो चुके हैं। वर्तमान कुछ वर्षों से पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध परोक्ष युद्ध छेड़ा हुआ है। वह आतंकवाद के जरिए भारत को अस्थिर करने की साजिश करता रहता है। वर्तमान में कश्मीर मुद्दा व पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद ने ही भारत-पाक शान्ति को भंग किया हुआ है। पाकिस्तान कश्मीर में युवाओं को भड़काकर अस्थिरता पैदा करना चाहता है व सीमा पर घुसपैठ करवाकर आतंकवादियों को आर्थिक व अन्य मदद मुहैया करवाता है। कश्मीर में अलगाववाद की भावना फैलाकर युवाओं को सेना पर पत्थर बरसाने को प्रेरित करता रहता है आतंक को आजादी की लड़ाई का नाम देता है। पाकिस्तान ने भारत में आतंकवादी हमलों की एक सीरीज सी चला रखी है बम्बई बम काण्ड, अक्षरधाम मन्दिर हमला, भारतीय संसद पर हमला, लालकिला पर हमला, पठानकोट हमला, जम्मू कश्मीर में आए दिन सेना के कैम्पों पर हमले तथा हाल ही में अमरनाथ यात्रियों पर हमला उसी श्रृखंला की अन्तहीन कड़ी है। भारत के एक सेवानितृत नौसेना अधिकारी नरेन्द्र जाधव को जासूस बताकर फाँसी की सजा देने से दोनों देशों के सम्बन्धों में और अधिक कटुता पैदा हुई है। मोदी सरकार द्वारा परस्पर वैमनस्यता कम

करने हेतू उठाए गए विभिन्न कदमों में से किसी का भी पाक सरकार उपयुक्त उतर देने में असमर्थ रही है। कश्मीर में नियन्त्रण रेखा पर आए दिन हो रहे सीजफायर उल्लंघन की घटनाओं ने स्थिति को और भी भयावह बना दिया है। भारत ने पाकिस्तान को MFN 'मोस्ट फेवरड नेशन' का दर्जा दिया हुआ है जिसके तहत व्यापार में उसे टैक्स से छूट मिलती है। जबकि पाकिस्तान ने भारत को MFN को दर्जा तो दिया था लेकिन 2011 में ही उसे समाप्त कर दिया।

चीन-पाकिस्तान गठजोड़ और भारत

विश्व की बदलती आर्थिक और सामरिक परिस्थितियाँ और विकास के क्षेत्र में अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि भारत अपने वैदेशिक सम्बन्धों को नई धार दे। ऐसे में पडोसियों से सुखद व विश्वास का माहौल होना तो अति आवश्यक है इसी बात को ध्यान में रखकर वर्तमान मोदी सरकार ने 'पहले पडौसी' की नीति पर चलने का निर्णय लिया व अपने पडौसियों तथा भारतीय उपमहाद्वीप के देशों से सम्बन्ध प्रगाढ़ करने पर बल दिया। इस को मद्देनजर रखते हुए मोदी सरकार के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में सार्क देशों के राष्ट्र अध्यक्षों को आमन्त्रित कर भारत ने अपनी तरफ से पहल की थी। इसके बावजूद भी आपसी सम्बन्धों में कोई सुधार प्रतीत नही हो रहा है। चीन का झुकाव आरम्भ से ही पाकिस्तान की ओर रहा है यह बात भारत-पाकिस्तान के बीच हुए 1965, 1971 व कारगिल युद्ध के समय भी स्पष्ट हो चुकी है। चीन सीमा विवाद का हल नही करना चाहता वह कभी अरुणाचल और सिक्किम को अपना हिस्सा बताने की कोशिश करता है तो कभी जम्मू-कश्मीर के नागरिकों को स्टेपल वीजा जारी करता है। भारत की चिंताओं को नजर अंदाज कर ब्रह्मपुत्र व उसकी सहायक नदियों पर बाँध बनाता है तथा नदी प्रवाह को मोड़ने की परियोजना पर काम कर रहा है।

चीन तथा पाकिस्तान स्वतन्त्र रुप से भारत की सुरक्षा व्यवस्था को इतना आहत कर चुके हैं कि इससे अब अंदाजा लगाया जा सकता है कि चीन-पाकिस्तान गठबन्धन भारत के लिए सामाजिक आर्थिक सैन्य सुरक्षा की दृष्टि से कितना बड़ा सिरदर्द साबित हो सकता है। पिछले दिनों भारत के थल सेना अध्यक्ष ने भारतीय सेना के एक साथ ढाई मोर्चे पर लड़ने की क्षमता का जिक्र किया था अर्थात चीन, पाकिस्तान के साथ ही आन्तरिक परिस्थिति से एक साथ लड़ने की क्षमता। लेकिन चीन व भारत के रक्षा बजट की तुलनात्मक समीक्षा के अनुसार भारत को इस सम्बन्ध में अभी काफी कुछ करना होगा। शीतयुद्ध के पश्चात चीन सोवियत संघ का स्थान लेने को तत्पर है। साथ ही एशिया में उभरते नेतृत्व के रुप में भारत को अपने भविष्य का प्रतिद्वन्द्वी समझ कर समय रहते ही कुचल देने की नीति पर कार्य कर रहा है। इसके लिए वह धन बल के सहारे भारत के पड़ोसियों का सहारा ले रहा है। चीन-पाकिस्तान का गठबन्धन द्वारा भारत के पड़ोसियों में रुचि व हिन्द महासागर के क्षेत्र में बढ़ रही उपस्थिति भारत के लिए आसन्न चुनौती है। विश्व की बदलती आर्थिक और सामरिक परिस्थितियाँ तथा चीन की बढ़ती साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को ध्यान में रखते हुए भारत को अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी के समर्थन हेतू स्वयं को तैयार कर लेना चाहिए। भारत को अपनी 'वसुधैव कुटुम्बकम' की नीति पर चलते हुए विशेष कूटनितिक और रणनीतिक कदम उठाने होंगे। चीन-पाक गठबन्धन के उपरान्त गहरे होते हुए चीन-पाक सम्बन्ध का प्रत्यक्ष प्रभाव भारत की सामरिक सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ रहा है। यह जुगलबन्दी भारत की समूची सुरक्षा व्यवस्था को एक चुनौती है। जिसका सामना भारत को सूझ-बूझ तथा अपने रणनीतिक व कूटनीतिक कदमों के साथ करना चाहिए। साथ ही अपनी सुरक्षा सम्बन्धी आवश्कताओं को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भर बनना होगा।

संदर्भ

1. आर.एस. यादव, भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषण, नई दिल्ली ।
2. अनाम जेतली, इण्टरनेशनल पोलटिक्स, नई दिल्ली ।
3. बी.एल. फड़िया - राजनीति विज्ञान ।
4. भारत की विदेश नीति, M.D.U. रोहतक के M.A. की पुस्तक ।
5. IGNOU के M.A. (राजनीति विज्ञान) के नोटस ।
6. विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादकीय लेख ।